चल खुसरो
घर आपने
मुक्ता

चल खुसरो घर आपने

कहानी

मुक्ता

चल खुसरो घर आपने

मंगला एकटक साजों को निहार रही है। तानपूरा, सितार, तबले की जोड़ी, सारंगी सभी अपने-अपने आसन पर विराजमान हैं। मंगलादेवी को सभी वाद्य निष्प्राण प्रतीत हो रहे हैं। अपना शरीर भी बोझिल लग रहा है। अधलेटी मंगलादेवी को तंद्रा सी घेर ले रही है जैसे पूरन आएगा और उँगली पकड़कर जिद करेगा, " आड़ा चौताला का तिगुन सध नहीं रहा। तबले को जरा छू दो न अम्मा!"

" कैसा पगला है ? छूने भर से क्या होगा ? लाओ बजा के ही दिखा देती हूँ। तिगुन सध गया तो कैसा भी आड़ कुआड़ हो, सध जाएगा। "

" नहीं अम्मा, तुम छू भर दो, तुम्हारी उँगलियों में जादू है। "

मंगला उछाह से पूरन को देखती। जीवन की पूँजी, साधो पला पूरन। एक दिन बड़ा कलाकार बनेगा। देश-विदेश में नाम रोशन करेगा।

आज वही पूरन कचहरी जाते हुए चेतावनी-सी दे गया है, " इस घर में साज नहीं बजेगा। चौबीस घंटे गाना-बजाना...यह शरीफों का घर है। तुम्हें ऊँचा सुनाई देता है इसीलिए जोर से कह रहा हूँ। सुन लो अम्मा। "

दो महीने पहले तक यही पूरन वाद्य वृंदों का संगी-साथी, उनका रखवाला था। वकालत पढ़ने के बावजूद सुबह-शाम नियम से रियाज करता था। रियाज के समय ऊपर सुत्थन के घर से शोर-शराबे से लेकर, टीन-कनस्तर के गिरने तक कुछ-न-कुछ ऐसा अवश्य घटित होता जिससे पूरन की साधना में विघ्न पड़ता। कई बार हाथापाई की नौबत भी आई। मंगला के बीच-बचाव करने पर बात टली।

बचपन में माँ से प्रश्न करता था, " इन कुँजड़ों को यहाँ किसने बसाया ?"

माँ के मौन रह जाने पर झुँझलाता हुआ बगीचे में घंटों बैठा रहता। बड़े होने पर मोहल्लेवालों के हाव- भाव ने उसे अंतर्मुखी बना दिया। वह माँ से प्रश्न नहीं करता। उसकी तीखी दृष्टि ही मंगला को अनंत प्रश्नों की कारा में कैद कर देती है।

ऊपरवालों के बसने के साथ ही जुड़ा हुआ है मंगला के बसने का प्रश्न ? मंगला की

सुरक्षा के लिए ही एक गरीब परिवार को शंभू साव ने के ऊपरवाले हिस्से में शरण दी थी। सुत्थन और उसकी घरवाली लक्ष्मी ने जीते-जी नमक का कर्ज समझा, कभी बेअदबी नहीं की। लक्ष्मी के स्वर्ग सिधारते ही बेटे-बहुओं का राज्य हो गया। जब तक सुत्थन जीवित रहा बेटे-बहुओं को फटकारता रहा, नरक का भय दिखाता रहा। कभी मंगला के आगे प्रायश्चित मुद्रा में खड़ा बाबा विश्वनाथ के लेखे को ललकारता रहा। पिछले वर्ष सुत्थन की भी मृत्यु हो गई। बीते वैभव की स्मृति शेष सुत्थन और लक्ष्मी के जाने के बाद मंगला और उदास हो गई। सुत्थन के बेटे-बहुओं के हौसले और भी बढ़ गए। कोठी में रहना दूभर होने लगा।

वैभव, समृद्धि और प्रसिद्धि की लंबी यात्रा मंगला ने तय की है। तलछट तक पहुँचने की पीड़ा भी भोगी है। अब केवल ढहती मेहराबें और टूटते बाजे उस अनकही कहानी को सुनाते रहते हैं। दालमंडी में मैना के नाम की शर्तें बदी जाती थीं। कितने रईसों को कंगाल और कितने कंगालों को रईस बना दिया मैना ने।

अनवरी, रसूलन, जानकी बाई आदि सभी कलावंतिनों में मैना का नाम अग्रणी था। वैसे तो गाने-बजाने की महफिल रोज ही जमती थी, लेकिन बुढ़वा मंगल के मेले की शान ही अलग थी। इस उत्सव के माध्यम से ही शंभू साव का मैना के जीवन में प्रवेश हुआ।

मंगला की स्नेहिल दृष्टि तानपूरे को सहला रही थी। तानपूरे के तार इंद्रधनुषी रंगों में रूपांतरित हो रहे थे, मंगला अतीत के रंगों में खोई हुई थी।

दालमंडी में मैना का ही कोठा था जहाँ सूर, कबीर से लेकर जयदेव की अष्टपदी तक के स्वर गूँजते थे। डाह में अन्य मंगलामुखियाँ जिनमें अनवरी का स्वर सबसे ऊँचा था तानें कसतीं, " बस भाँवरें फिरना ही बाकी बचा है। लक्षण तो सती-सावित्री जैसे हैं। असलियत तो यह है कि इसकी सात पुश्तों ने कोठे को आबाद किया है। इसके आगे हमारे तो दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं। "

उस दिन भी मैना रियाज कर रही थी-

' काहे पिया नाहिं बोल रहे...